15 अगस्त, 2019 के अवसर पर कुलपति प्रो. अशोक कुमार सरयाल जी का सम्बोधन

- स्वतन्त्रता दिवस समारोह के इस पावन अवसर पर आप सबको मेरी ओर से बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।
- विश्वविद्यालय के संविधिक अधिकारीगण, विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय परिसर एवं बाहरी केन्द्रों के शिक्षक, गैर–शिक्षक कर्मचारी वर्ग, अतिथिगण तथा मेरे प्रिय विद्यार्थियो!
- 15 अगस्त 1947 स्वतन्त्रता संग्राम का वह दिन था जब भारत को ब्रिटिश राज से आजादी मिली और इस प्रकार एक नए युग की शुरूआत हुई, जब भारत एक मुक्त राष्ट्र के रूप में उभरा। स्वतन्त्रता दिवस के दिन दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र भारत के जन्म का आयोजन किया जाता है और भारतीय इतिहास में इस दिन का अत्यन्त महत्व है।
- भारतीय स्वतन्त्रता के संर्घष में अनेक अध्याय जुड़े हैं जिनमें 1857 की क्रान्ति से लेकर जलियांवाला बाग नरसंहार, असहयोग अन्दोलन से लेकर नमक सत्याग्रह तक शामिल हैं। अंग्रेजों से आजादी पाना भारत के लिए आसान नहीं था लेकिन कई महान पुरूषों और स्वतन्त्रता सेनानियों ने इसे सच कर दिखाया। अपने सुख व आराम की चिंता किये बगैर उन्होंने भावी पीढ़ी यानि हम और आप की आजादी के लिए अपना जीवन बलिदान तक कर दिया।
- यह दिन हमारी आजादी का जश्न मनाने और सभी शहीदों को श्रद्धांजली देने का अवसर है, जिन्होंने इस महान कार्य के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। स्वतन्त्रता दिवस पर प्रत्येक सच्चे भारतीय के मन में राष्ट्रीयता, भाईचारे और निष्ठा की भावना भर जाती है।
- स्वतन्त्रता दिवस का प्रतीक है 'नई दिल्ली का लाल किला' जहां हर वर्ष स्वतन्त्रता दिवस पर भारतीय प्रधानमन्त्री झंडा फहराते हैं, लेकिन 15 अगस्त 1947 को ऐसा नहीं हुआ था। लोक सभा सचिवालय के एक शोध पत्र के अनुसार भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने 16 अगस्त 1947 को लाल किले से झंडा फहराया था क्योंकि 15 अगस्त 1947 की आधी रात को भारत ने ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाई थी।
- इस वर्ष का स्वतन्त्रता दिवस इसलिए भी विशेष हो गया है कि इसी माह लिए गए ऐतिहासिक निर्णय के कारण जम्मू–कश्मीर और लद्दाख नए केन्द्रीय शासित क्षेत्र बनकर सम्पूर्ण रूप से देश के अभिन्न अंग बन गए हैं।
- 15 अगस्त का यह दिन भारत के आलावा तीन अन्य देशों का भी स्वतन्त्रता दिवस है। दक्षिण कोरिया इसी दिन 1945 को जापान से आजाद हुआ था। बहरीन इसी दिन 1971 को ब्रिटेन से और कांगो 15 अगस्त 1960 को फ्रांस से आजाद हुआ था।
- किसी भी देश के लिए उसके भविष्य के सफर पर इतिहास का असर साफ झलकता है। इस वजह से यह जरूरी है कि मौजूदा पीढ़ी को पूर्वजों के बलिदान की जानकारी हो। उनके प्रति आदर हो। ऐसे में इस दिन से बेहतर और क्या हो सकता है जब उन्हें बताया जाए कि स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों ने किन–किन परेशानियों का सामना किया

और देश को आजाद कराया। मौजूदा पीढ़ी के लिए यह दिन काफी महत्वपूर्ण है ताकि वह इतिहास पर चर्चा कर सकें और इसे समझ सकें।

- 15 अगस्त का महत्व हमारे जीवन में और भी बढ़ गया है। देश की सीमाओं के भीतर और बाहर कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
- भारतवर्ष और तिरंगा केवल आयोजन ही नहीं है बल्कि आज की युवा पीढ़ी जब तक आजादी के मूल्य को नहीं समझेगी तब तक ऐसे आयोजनों का कोई मतलब नहीं रह जाता।
- आज के युवाओं की जिम्मेदारी है कि वे 1947 की उस जादुई रात की भावना को महसूस करें और स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के बताए रास्तों पर चल कर आगे बढ़ें।
- स्वतन्त्रता के कारण ही आज हम इस बात का गर्व महसूस कर रहे हैं कि भारत दुनिया की एक विश्व शक्ति के रूप में उभर कर आया है।
- कृषि क्षेत्र में आज हमारा देश खाद्यान्न में न केवल आत्मनिर्भर है बल्कि बासमती चावल, गेहूं व मक्का इत्यादि में 65 हजार करोड़ रूपये का सालाना निर्यात भी कर रहा है। बासमती में तो 25000 हजार से 30,000 करोड़ रूपये का विदेशी व्यापार कर भारत दुनिया का अग्रणी देश बन गया है। इसका श्रेय समय–समय की सरकारों, नीति निर्धारकों, कृषि वैज्ञानिकों व मेहनतकश किसानों को जाता है।
- हरित क्रान्ति के बाद समय–समय पर देश तथा प्रदेश की सरकारों ने कृषि विकास व कृषि शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। स्वतन्त्रता के बाद एक ऐतिहासिक फैसले के अन्तर्गत वर्ष 2004 में राष्ट्रीय किसान आयोग का गठन किया गया ताकि खेती युवा पीढ़ी के लिए एक लाभदायक उद्यम सिद्ध हो सके। युवाओं को खेती की ओर आकर्षित करने के लिए आयोग ने अनुशंसा की है कि प्रयास ऐसे होने चाहिए कि हर कृषक परिवार में एक कृषक स्नातक हो। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कई अन्य अनुशंसाएं भी दी। आयोग की रिपोर्ट के अनुरूप ही माननीय प्रधानमन्त्री जी ने वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य रखा है जिस पर केन्द्र तथा राज्य सरकारें जोर शोर से कार्य कर रही है।
- हिमाचल प्रदेश की बात करें तो खाद्यान्न उत्पादन जो यहां वर्ष 1950 में मात्रा 1.99 लाख मीट्रिक टन था, आज कुल उत्पादन 16 लाख मीट्रिक टन से अधिक पहुंच चुका है।
- प्रदेश में 81 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि वर्षाश्रित है जहां बागवानी सहित मुख्य फसलों की पैदावार विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध वर्षा की मात्रा पर ही निर्भर करती है। इन क्षेत्रों में जहां आवश्यकता से अधिक लगभग 80 प्रतिशत वर्षा मानसून के दौरान होती है। वर्ष के अन्य समय में मात्र 20 प्रतिशत वर्षा ही होती है जिससे कृषि योग्य भूमि में पर्याप्त नमी बरकरार नहीं रहती है।
- कृषि तथा बागवानी क्षेत्र पर वर्तमान सरकार ने विशेष ध्यान केन्द्रित किया है। केन्द्र व प्रदेश सरकार ने किसानों की बेहतरी व फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए अनेक योजनाएं प्रारम्भ की हैं। इनमें जहां सिंचाई, सूक्ष्म सिंचाई, मिट्टी की जांच के लिए मृदा स्वास्थ्य

कार्ड जैसी कई योजनाएं शामिल हैं, वहीं प्रधानमन्त्री फसल बीमा योजना भी शुरू की गई है।

- हिमाचल प्रदेश में मुख्यमन्त्री श्री जयराम ठाकुर जी की सरकार ने सिंचाई सुविधाओं की ओर ध्यान दिया है। आजादी से लेकर हिमाचल प्रदेष की स्थापना और वर्तमान तक 70 वर्षों के लम्बे अन्राल में सिंचाई सुविधाओं का अभाव रहा है जबकि देश की पांच मुख्य नदियों का हिमाचल प्रदेष से उद्गम होता है और ये नदियां पड़ौसी राज्य पंजाब, हरियाणा, राजस्थान की क्रमशः 98, 84 और 40 प्रतिशत खेती योग्य भूमि को सिंचित करती हैं।
- कृषि विश्वविद्यालय के अनुसन्धान के प्रयोगों से यह साबित किया जा चुका है कि सिंचित क्षेत्रों में विभिन्न फसलों की उत्पादकता तीन गुणा ज्यादा होती है। असिंचित क्षेत्र की तुलना में यदि प्रदेश की 5.54 लाख हैक्टेयर कृषि योग्य भूमि में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो जाए तो प्रदेश का खाद्यान्न उत्पादन तीन गुणा अधिक किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, प्रदेश सरकार में कार्यरत इस विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र व मेहनतकश किसानों के सहयोग से इन लक्ष्यों को पूरा करने में सक्षम हैं।
- गत वर्ष प्रदेश को भारत सरकार द्वारा कृषि कर्मणन पुरूस्कार से चौथी बार सम्मानित करना प्रमाणित करता है कि यदि प्रदेश में सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध हो जाए तो वैज्ञानिक यहां 50 लाख टन से भी अधिक खाद्यान्न उत्पादन करने की क्षमता रखते हैं।
- साथियो ! मुझे माननीय राज्यपाल महोदय एवं प्रदेष सरकार ने इस विश्वविद्यालय में दोबारा कार्य करने का सुअवसर प्रदान किया है। पहले तीन वर्षों में आप सब के सहयोग से कई सुधार करके और संकाय की कड़ी मेहनत व मार्गदशर्न से अपने छात्रों को शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता दिलाने में सफलता हासिल हुई। विश्वविद्यालय के शैक्षणिक व गैर–षैक्षणिक कर्मचारियों और विद्यार्थियों के लिए यह गौरव का विषय है। इसके लिए मैं आप सब को बधाई देता हूं।
- भारत सरकार के भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् ने रैंकिंग के आधार पर इस विश्वविद्यालय को 11वें स्थान पर आंका है। इस वर्ष बी.वी.एस.सी व ए.एच. तथा बी. एस.सी.(आनर्स) कृषि की 152 सीटों के लिए सर्वाधिक इस वर्ष भी 17773 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था। विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए आवेदन करने वाले रिकार्ड तोड़ आंकडों से इस विश्वविद्यालय के उत्कृष्ट शिक्षा मानकों का पता चलता है जिसे आगे भी कायम रखा जाना चाहिए।
- कर्मचारियों की कड़ी मेहनत के कारण विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार गत वर्ष 193 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की थी। कृषि महाविद्यालय के 15 छात्रों ने देश के विभिन्न संस्थानों में पी.एच.डी. में प्रवेष के लिए प्रतिष्ठित सीनियर रिसर्च फैलाशिप परीक्षा उतीर्ण की थी और राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय का परिणाम 92.7 प्रतिशत रहा था। ए.एस.आर.बी. की वर्ष 2017 की मुख्य परीक्षा में विश्वविद्यालय के 8 विद्यार्थियों का वैज्ञानिकों के पद के लिए चयन हुआ था और यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय स्तर पर दूसरे स्थान पर रहा। वर्ष 1978 में

अपनी स्थापना के बाद यह पहला अवसर है कि जब मात्र तीन वर्षों में विश्वविद्यालय के इतने अधिक छात्रों ने प्रतिष्ठित परीक्षाएं उतीर्ण की हैं।

- हाल ही में भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के मॉडल एक्ट के पुनर्वीक्षण हेतु कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की एक कॉन्फ्रैंस का आयोजन विश्वविद्यालय में हुआ जो विश्वविद्यालय के लिए बड़े गर्व की बात है। भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् की क्षेत्रीय समिति द्वारा भी 30 जुलाई को विश्वविद्यालय में एक राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।
- मुझे यह बताकर प्रसन्नता हो रही है कि मेरे निजी प्रयासों से विश्वविद्यालय के नियमित छात्रों के लिए फैलोशिप प्रदान करने हेतू पुराने विद्यार्थियों ने योगदान देना शुरू किया है। बी.एस.सी. कृषि के पूर्व छात्रों ने 25 लाख की राशि विश्वविद्यालय खाते में जमा करके चार ''बैच फैलोशिप'' शुरू की हैं।
- भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् ने हाल ही में वर्ष 2023 तक विश्वविद्यालय को पांच वर्ष के लिए सम्बद्धता प्रदान कर दी है और आई.एस.ओ. संस्था ने भी विश्वविद्यालय को आगामी तीन वर्षों के लिए आई.एस.ओ. प्रमाणीकरण जारी कर दिया है। आप सब को बेहतर कार्यक्षमता कायम रखने तथा विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाने हेतु बधाई देता हूं और आग्रह करता हूं कि किसानों व विद्यार्थियों की सेवा हेतु इस जज्बे को कायम रखें।
- तीन करोड़ रू. की लागत से 'शून्य लागत खेती केन्द्र' स्थापित करने वाला देश भर में यह पहला विश्वविद्यालय है और इस समय 31 विद्यार्थी शून्य लागत खेती पर शोध कर रहे हैं। यह विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश को शून्य लागत खेती राज्य बनाने के लिए कृतसंकल्प है। शोध परियोजनाएं लाने हेतु भी मैं वैज्ञानिकों की प्रशंसा करता हूं जिन्होंने विश्वविद्यालय में गेहूं, सोयाबीन तथा सरसों की तीन नई किस्में विकसित की हैं और प्रदेश के किसानों के लिए इनकी अनुषंसा की है। हाल ही में 23 करोड़ रू. की एक अन्य योजना एडवांस केन्द्र के लिए स्वीकृत हुई है। इससे प्राकृतिक खेती शोध को और बढ़ावा मिलेगा।
- अनुसन्धान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने गतवर्ष विभिन्न फसलों की 11 किस्में किसानों के लिए जारी की और लगभग 1150 क्विंटल बीज उत्पादित किया। किसानों के लिए गेहूं का 600 क्विंटल बीज का उत्पादन किया गया जो कि प्रदेश के 67 प्रतिशत गेहूं क्षेत्रों के लिए पर्याप्त है। 10 करोड़ रू. की लागत वाली बृहद परियोजना के माध्यम से 75 हैक्टेयर क्षेत्र बीज उत्पादन हेतु विकसित किया जाएगा। विश्वविद्यालय ने अपनी घरेलू आय दोगुनी करके 10 करोड़ से बढ़ाकर लगभग 19 करोड़ तक पहुंचा दी।
- इस समय 64 करोड़ रू. की 145 शोध परियोजनाएं विश्वविद्यालय में चल रही हैं।
- गत वर्ष से मार्च, 2019 तक विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा के अन्तर्गत 1990 प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 53500 किसान लाभान्वित हुए हैं। पिछले वर्ष की भांति विश्वविद्यालय और सतलुज जल विद्युत निगम फाऊन्डेशन ने 800 किसानों को प्रशिक्षण देने हेतु इस वर्ष भी एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। विश्वविद्यालय ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों की

दक्षता बढ़ाने के लिए स्किल काउंसिल ऑफ इण्डिया के साथ भी एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं।

- बेरोजगारी से निपटने तथा सरकार की विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु भी विश्वविद्यालय कार्य कर रहा है जिनके अन्तर्गत भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं तथा हिमाचल प्रदेश सरकार के मुख्य मन्त्री स्टार्ट–अप जैसे कार्यक्रमों से युवक भरपूर लाभ उठा सकते हैं और सफल उद्यमी बनने के लिए अपने विचारों को मूर्तरूप दे सकते हैं।
- किसानों की आय वर्ष 2022 तक दोगुनी करने के लिए 20 मॉडल विकसित किए गए।
- विश्वविद्यालय रैगिंग मुक्त और तम्बाकू मुक्त संस्थान बना रहा है। ये गौरवशाली परम्परा बनी रहनी चाहिए।
- सड़कों और भवनों के नवीनीकरण के लिए 95 लाख रू. आबंटित किए गए हैं तथा अतिथिगृह के विस्तारीकरण पर भी 83 लाख रू. खर्च किए जा रहे हैं।
- शैक्षणिक, शोध व प्रसार गतिविधियों में उत्कृष्टता लाने के लिए विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों व कर्मचारियों को सुविधाएं प्रदान करने के प्रयत्न जारी हैं।
- आप सबके सहयोग से विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कर्मचारियों व पैंशनरों को समयबद्ध सभी देय भत्ते दिए जा रहे हैं। शिक्षकों व गैर–शिक्षकों के 225 भरने की प्रक्रिया जारी है।
- पिछले वर्ष छात्राओं के लिए भी एन.सी.सी. प्रारम्भ की गई थी और इस वर्ष 36 कैडेटस ने एन.सी.सी. 'सी' सर्टीफिकेट की परीक्षा पास की है। इसमें 20 छात्राएं भी शामिल हैं। सभी को बहुत बधाई।
- छात्र कल्याण संगठन द्वारा आयोजित आज के इस इस कार्यक्रम में एन.सी.सी. कैडेटों ने बढ़िया मार्च पास्ट किया। मैं इस मौके पर उन सबको भी बधाई देता हूं जिन्हें उत्कृष्ट मार्च पास्ट के लिए आज सम्मानित किया गया।
- पुरूस्कार प्राप्त करने वाले एन.एन.एस. व एन.सी.सी. केडेटस को साधुवाद।
- आज के इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्य, विद्यार्थी, छोटे बच्चे तथा अन्य सम्माननीय अतिथियों ने शामिल होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। बहुत अच्छा लगा। आगे के लिए भी इस तरह के कार्यक्रमों में आप सपरिवार भाग लेते रहें।
- मैं पुनः स्वतन्त्रता दिवस के इस शुभ अवसर पर आपका धन्यवाद करते हुए अपनी ओर से तथा विश्वविद्यालय की तरफ से आप सब को शुभ कामनाएं देता हूं।

धन्यवाद ! जय हिन्द !